



धातुरूपाणि

संस्कृतभाषायां क्रियार्थं धातुरूपाणां प्रयोग: भवति। धातुरूपेषु पञ्चलकाराणां मुख्यत: प्रयोग: भवति। यथा —

लट्लकार:

(वर्तमानकाले)





जन: चलदूरभाषे चित्राणि पश्यति।

ह्य: त्वं कुत्र आसी:?

लृट्लकार: (भविष्यत्काले)



श्व: आवाम् आपणं चलिष्याव:।

लोट्लकार: (आज्ञार्थे)



अत्र मा तिष्ठ।



धातुरूपाणि

विधिलिङ्लकार (संभावनार्थे)



प्रत्येकं लकारे त्रय: पुरुषा: त्रीणि वचनानि च भवन्ति। अधुना वयं लट्लकारस्य माध्यमेन कर्तृ-क्रिया-अन्वितिं प्रदर्शयन्तीम् इमाम् तालिकाम् अवगच्छाम:-

संभवत: अद्य वर्षा भवेत्।

लट्लकार: (पठ्धातु)

| | | <u> </u> | ` | | |
|--|---------------------|--------------------|---------------------------|--|--|
| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | | |
| प्रथम: पुरुष: | पठति | पठत: | पठन्ति | | |
| (कर्तृपदम्) | (स:,सा,तत्) | (तौ,ते,ते) | (ते,ता:,तानि) | | |
| मध्यम: पुरुष: | पठसि | पठथ: | पठथ | | |
| (कर्तृपदम्) | (त्वम्) | (युवाम्) | (यूयम्) | | |
| उत्तम: पुरुष: | पठामि | पठाव: | पठाम: | | |
| (कर्तृपदम्) | (अहम्) | (आवाम्) | (वयम्) | | |
| एवमेव सर्वाषु धातुषु सर्वेषु लकारेषु च क्रियाया: (धातुरूपाणां) प्रयोग: भवति। | | | | | |
| 1. कोष्ठके प्रदत्त-धातूनाम् उचितै: रूपै: रिक्तस्थानानि पूरयत — | | | | | |
| i. ये छात्रा: कक्षायां ध्यानेन पाठं (श्रु, लट्), ते अभीष्टं परिणामं | | | | | |
| | ····· (लभ् <u>.</u> | , लट्)। | | | |
| ii. भो छा | त्रा:! जंक इति भो | ज्यवस्तूनि तु कद | पि मा (भक्ष्, लोट्) | | |
| iii. अनुशा | ासनबद्ध: बाल: य | थाकालं सर्वं कार | कर्तुं। (शक्, लट्) | | |
| iv. पुत्र! | (| दृश्, लोट्) स्वलेर | वम्। त्वं ध्यानेन सुलेखं। | | |
| (लिख् | ; लोट्) | | | | |

| v. | पित:! अद्याहम् ध्यानेन लिखित्वा भवते। (दृश्, लृट्) |
|--------|--|
| vi. | रमा आश्रमे पुष्पाणि। (चि, लट्) |
| vii. | यदि अहम् एतत् कार्यं कुर्याम् तर्हि कमुपहारं? (लभ्, लृट्) |
| viii. | ये जनाः यत्किमपि अखाद्यम् (भक्ष्, लट्) ते प्रायः अस्वस्थाः |
| | ······(भू, लट्) |
| ix. | भो बाला:! कमपि प्राणिनं मा (तुद्, लोट्) |
| х. | भवान् किं सत्यं (ब्रू, लट्) |
| , | दुर्घटनायाः विषये प्रकाशितेऽस्मिन् समाचारपत्रे धातुरूपाणाम् अशुद्धयः |
| सञ | जाता:। एतत् समाचारपत्रं पठित्वा क्रियापदानि शुद्धानि कुरुत- |
| यथ | |
| | अहम् समाचार-पत्रे <u>पठामि</u> अपठम् यत् रेलदुर्घटनायाम् अनेके जना: आहता:। |
| i. | केचन जनाः तान् असेवन् परम् दुःखस्य |
| ii. | विषय: एष: सन्ति यत् केचित् दुर्जना: तेषां |
| iii. | धनस्यूतम् अचोरय: येन अनेकेषां तु |
| iv. | परिचयपत्रमपि न अमिलत्। इतोऽपि |
| v. | अधिकं यत् तेषां दु:खेन संवेदनहीना: |
| vi. | जनाः तु केवलं स्वचलदूरभाषयन्त्रेण तस्याः |
| vii. | घटनायाः वीडियो-निर्माणे संलग्नाः सन्ति। |
| 3. उचि | ात-धातुरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयत — |
| i. | न कोऽपि जानाति श्व: किम्? (भू) |
| ii. | ह्यः त्वम् आपणात् किं (क्री) |
| iii. | आगामिवर्षे अहम् विदेशम्। (गम्) |
| iv. | अधुना त्वं किं। (पच्) |
| v. | गतदिवसे अहम् एतत् पुस्तकम्। (इष्) |
| vi. | परश्व: अहम् तव गृहे। (स्था) |

on out

136



धातुरूपाणि

4. प्रदत्तै: पदै: वाक्यानि रचयत-

x. अस्ति

| i. | सिञ्चति | |
|------|-----------|--|
| ii. | पठेयु: | |
| iii. | कथयानि | |
| iv. | पिबाव | |
| v. | सेवामहे | |
| vi. | आसन् | |
| vii. | लेखिष्यसि | |
| iii. | अपश्य: | |
| ix. | लभन्ते | |

